Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 10240756

Roll No. 24040000008
Total Mark 60/75.00

Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A020702T - SANSKRIT VYAKARAN EWAM NIBANDH

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	3/5						
1H	4/5						
1I	3/5						
2	NA/15						
3	13/15						
4	NA/15						
5	NA/15						
6	NA/15						
7	NA/15						
8	NA/15						
9	13/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 24-12-24 Shift: 1st Room No.: 11

Paper Code: A020702T Subject: संस्कृत व्याकरण एवं निबन्ध Year/Sem: Ist

Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI

Roll No.: 2404000008

COE Facsimile

Signature of Invigilator

Shanya Agnihotri

Signature of Candidate

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks

Total Marks in Words

A020702T

Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: M.A.

Session: 2024-25 Year/Semester: Ist

Subject: संस्कृत व्याकरण एवं निबन्ध

Paper Code: A020702T

Exam Date: 24-12-2024

Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI

Father's Name: ONKAR AGNIHOTRI

महाविद्यालय का कोड College Code: FB01

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: FB01

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular ● / भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○ / व्यक्तिगत Private ○ / बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

10240756

A020702T

Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: CSJMA21001444802

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2404000008

पेपर कोड Paper Code: A020702T

Shanya Agnihotri

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बीच में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनाये क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no. corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

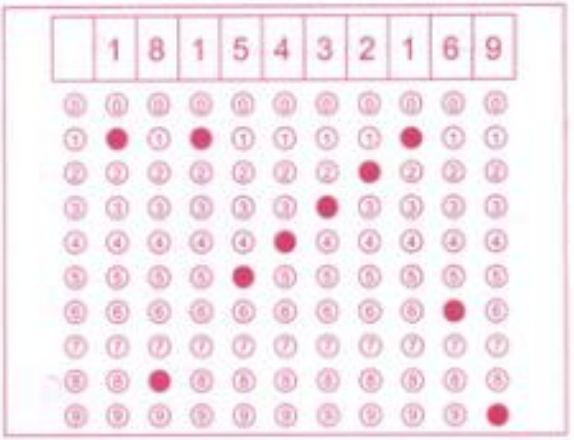

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

Paper Code

01

खण्ड - 'अ'

उत्तर-1(A) **कारक :→**

"क्रिया करोति ~~निर्वतति~~ निर्वर्तयति वा कारकम् ।"

अर्थात्, जिन पदों से क्रिया सिद्ध होती है या क्रिया का ~~निर्वमन~~ ~~निर्वहन~~ निर्वपन किया जाता है, कारक कहे जाते हैं।

यथा - रामः पठति। (राम पढ रहा है)

राम के द्वारा 'पठन' क्रिया हो रही है अतः राम कारक है।

कारक के भेद :-

कारक के छः भेद माने जाते हैं-

1- कर्ता
2- कर्म
3- करण
4- सम्प्रदान
5- अपादान
6- अधिकरण

→ कारक

सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता है।

उत्तर-1(B) "क्रिया क्रियते कारकम्" अर्थात् जिन पदों के द्वारा क्रिया की जाती है कारक होते हैं।

कारक छः हैं -

कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण।

षष्ठी विभक्ति ~~को~~ में कारक नहीं होता है। षष्ठी विभक्ति में कर्ता और कर्म से भिन्न जो सम्बन्ध शेष रह जाता है उसकी संज्ञा होती है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

"षष्ठी शेषे"

यथा - राजाज्ञः पुत्रः (राजा का पुत्र)।

उपर्युक्त उदाहरण में कर्ता और कर्म से भि सम्बन्ध को बताया गया है।

उत्तर-1(C) अनुक्त कर्ता :-

"अनभिहिते"

'अनुक्त' अर्थात् जो कहा न गया हो। अनुक्त कर्ता में कर्तृवाच्य का प्रयोग होता है। यह कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है। अनुक्त कर्ता द्वितीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है।

यथा - हरिं भजति। (हरि को भजता है) यहाँ 'हरि' का भजन किसी व्यक्ति के द्वारा किया जा रहा है। अतः यहाँ क्रिया हो रही है। अतः हरि की "अनभिहिते" सूत्र से कर्म संज्ञा होकर "द्वितीया कर्मणि" से द्वितीया विभक्ति हो जायेगी।

उत्तर-1(D) प्रकृति पद :- प्रकृति पद अर्थात् मूल पद (धातु/शब्द) यथा 'रम्' धातु इत्यादि।

प्रत्यय पद :- प्रत्यय पद धातु ~~का विभक्ति~~ पदों के अन्त में लगकर अर्थक पद बनाते हैं।

"प्रत्ययः"

प्रत्यय सुप्, तिङ्, तिङन्त, तद्धित होते हैं।

यथा - 'रम्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगकर 'राम' शब्द बनता है।

रम् + घञ् ⇒ राम

(प्रकृति) (प्रत्यय)

उत्तर-1(E) 'सम्बोधने च' :→

सम्बोधन का अर्थ होता है – सम्यक् बोधन अर्थात् भली भाँति समझाना। जब वक्ता श्रोता को अपनी बात समझाने के लिए अपनी ओर आकृष्ट करता है तब वह सम्बोधन कहलाता है।

यथा → हे रामः!

वक्ता 'राम' को अपनी बात सुनाने या समझाने के लिए हे रामः! कहता है। अतः 'सम्बोधने च' सूत्र से प्रथमा विभक्ति हो जायेगी।

उत्तर-1(F) 'येनाङ्गविकारः' :→

जब किसी विकृत अंग द्वारा अङ्गी (शरीर) का विकार बतलाया जाता है तब उस अङ्ग की तृतीया विभक्ति होती है।

यथा :- अक्ष्णा काणः (एक आँख का काना) यहाँ आँख की विकृति द्वारा शरीर की विकृति (कानापन) बताया जा रहा है अतः यहाँ 'अक्ष' में "येनाङ्गविकारः" सूत्र से तृतीया विभक्ति हो जायेगी।

जब अंग के विकार द्वारा शरीर का विकार बताया जाये तभी तृतीया होगी।

यथा – अक्षमणस्य काणः (उसकी एक आँख कानी है) यहाँ आँख के द्वारा अंग का विकार तो बताया गया है परन्तु शरीर का विकार नहीं। अतः यहाँ 'अक्ष' में तृतीया नहीं होगी।

उत्तर-1(G) विभक्ति 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'भज्' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय के योग से बनी है। इसका अर्थ है – विभाग। विभक्ति स्वौज - सुप्‌ ------- के भेद से

Do Not Write anything in this Portion

इक्कीस हैं। जो सात विभक्ति में तीन-तीन के त्रिकों में विभक्त हैं।
विभक्ति सात हैं –
प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी।

उत्तर-1(H) "कर्तुरीप्सिततमं कर्म"।–
जो पदार्थ कर्ता को सबसे अधिक ईप्सित हो उसकी कर्म संज्ञा होती है। अर्थात् जिस पदार्थ की कर्ता की सबसे अधिक चाह हो वह पदार्थ कर्मसंज्ञक होता है।
यथा – "बालकः पयसा ओदनं भुङ्क्ते" अर्थात् बालक दूध से चावल खा रहा है। यहाँ बालक का ईप्सिततम चावल है दूध नहीं। इसलिए 'ओदन' की "कर्तुरीप्सिततमं सूत्र" से कर्म संज्ञा तथा "कर्मणि द्वितीया" से द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

उत्तर-1(I) "आधारोऽधिकरणं"।→
कर्ता और क्रिया के आधार की अधिकरण संज्ञा होती है।
यथा →
हरिः वैकुण्ठे तिष्ठति। (हरि बैकुण्ठ में बैठते हैं)
यहाँ हरि (कर्ता) और बैठना (क्रिया) दोनों का ही आधार बैकुण्ठ है अतः बैकुण्ठ में "आधारोऽधिकरणं" सूत्र से अधिकरण संज्ञा हो गयी है। तथा "सप्तम्यधिकरणे" से सप्तमी विभक्ति होगी।

Paper Code

05

खण्ड-ब

उत्तर - 3

अकथितं च :→

'अकथित' का अर्थ है - जो न कहा गया हो, अविवक्षित (जिसकी विवक्षा न हो)। और 'च' के अन्तर्गत कर्म को ग्रहण किया गया है। तात्पर्य यह है कि "जहाँ अपादान आदि कारक (करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण) की विवक्षा न हो वहाँ कर्म संज्ञा होती है।" अर्थात् वक्ता चाहे तो अपनी बात करणादि कारकों में कहे या कर्म में कहें। यहाँ वक्ता स्वतन्त्र होते हैं।

जिन धातुओं में वक्ता स्वतन्त्र होता है वे सोलह धातुएँ हैं। इन धातुओं को द्वि-अर्थक धातु भी कहा जाता है अर्थात् इनसे दो अर्थ प्रकट होते हैं - ① साधारण कर्म :- यह प्रधान कर्म होता है। ② अकथित कर्म :- यह अप्रधान कर्म होता है अर्थात् अपादानादि की विवक्षा न होने पर कर्म संज्ञा होती है।

अकथित को अप्रधान, गौण कर्म भी कहते हैं। ये सोलह धातुएँ हैं —

1- दुह् (दुहना)
2- याच् (माँगना, प्रार्थना करना)
3- पच् (पचाना)
4- दण्ड् (दण्ड देना)
5- रुध् (रोकना)
6- प्रच्छि (पूछना)
7- चि (चुनना)
8- ब्रू (कहना)
9- शास् (शासन करना)
10- जि (जीतना)

Paper Code

11- मुथ् (मथना)
12- मुष् (चुराना)
13- नी (ले जाना)
14- हृ (हरना)
15- कृष् (खींचना)
16- वह् (वहन करना, ढोना)

उपर्युक्त धातुओं में पूर्व की 'दुह्' आदि बारह धातुएँ तथा बाद की नी आदि चार धातुएँ, कुल सोलह धातुएँ कर्म संज्ञक होती हैं(अपादानादि कारकों की विवक्षा में)

यथा → 1- गां दोग्धि पयः (गाय से दूध दुहता है) यहाँ अपादानादि की विवक्षा न होने 'दुह्' धातु के योग में गाय (अपधान कर्म) में 'अकथितं च' सूत्र से कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुयी है।

अपादान की विवक्षा होने पर गौ पयः दोग्धि होता।

2- बलिं याचते वसुधाम् (बलि से पृथ्वी माँगता है) यहाँ पृथ्वी माँगना प्रधान कर्म है। और अपादानादि कारकों के अविवक्षित होने पर 'याच्' धातु के योग में 'बलि' की 'अकथितं च' सूत्र से कर्म संज्ञा तथा "कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

अर्थात् अपादानादि कारकों के अविवक्षित होने पर उपर्युक्त सोलह धातुओं के योग में कर्ता की कर्म संज्ञा होती है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

07

खण्ड - स

उत्तर - 9 (i) न स्वपक्षे नागरिकाणाम् अनुशासनहीनताया: लाभं प्राप्नुवन्ति। यदि ते अनुशासनहीनता प्रदर्शयन्ति तदा राष्ट्रजीवनम् संकटापन्नं जायते।

उत्तर - 9 (i) प्रतीक्षमाणा: शत्रव: स्वपक्षे नागरिकाणाम् अनुशासनहीनताया: लाभं प्राप्नुवन्ति।

उत्तर - 9 (ii) अनुशासनपदस्य अर्थ: – आज्ञापालनम्। आज्ञापालनम्, नियमपालनम् इत्यादय: गुणा: अनुशासने समायन्ति।

उत्तर - 9 (iii) अनुशासनेन सर्वेषां जीवनं सुखमयं भवति। यदि नागरिक: आज्ञापालनम् नियमपालनम् स्व-संविधाने स्वीकृतान नियमान् पालयतु च तदा देश: समुन्नतिं करोति। एतद् जनानां जीवनं सुखमयं भवति।

उत्तर - 9 (iv) 'प्राप्नुवन्ति' → 'प्राप्नुवन्ति' क्रियापदस्य 'पा' अस्ति कर्तृपदम् क्तिन च अस्ति।

उत्तर - 9 (v) नागरिकै: अनुवर्तनीया: नियमा: स्व-संविधाने सन्ति।

उत्तर - 9 (vi) अनुशासित नागरिकस्य इदं कर्तव्यं अस्ति स: स्व संविधाने स्वीकृतान् नियमान् पालयतु।

उत्तर - 9 (vii) 'अवनतिम्' पदस्य विलोमपदं 'उन्नतिं' अस्ति।

उत्तर - 9 (viii) अनुशासने आज्ञापालनम्, नियमपालनम् इत्यादय: गुणा: समायन्ति।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

08

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

09

Do not write anything in this Portion

Paper Code

10

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

11

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

15

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

16

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion